For Review

H RACHAR SERIES, PAMPHLET No. 2.

HE FIRST HINDI READER.

हिन्दीभाषा की पहिली पुस्तक

"எறும்பூறக் கல்லும்தேயும்."

Constant dropping wears away stones."

"చీమలునడచిన రాళ్లరుగు."

डॉ. म. म. द. वा. पोतदार,
ग्रंथ संग्रह

PUBLISHED BY

SWAMI SATYADEVA PARIBRAJAKA,

DI PRACHAR OFFICE, MADRAS.

856
Par
3998

डॉ. म. म. द. वा. पोतदार,
ग्रंथ संग्रह

nvat 1976, Baisakha.

FIRST EDITION.

by Right] [Price two annas.

PRINTED AT
THE MODERN PRINTING WORKS,
MOUNT ROAD, MADRAS.

Copies to be had of :—

THE HINDI PRACHAR OFFICE,
SOWCARPET, MADRAS.

ह/1909

856
Par
153

PREFACE

This Reader is intended for the use of the educated classes of the Madras Presidency. Hitherto many have learned the Hindi Language with the help of the ordinary primer. But this book is specially designed for grown up and educated persons though it will also serve the purpose of a Primer. We hope also to publish a key to this Reader in Tamil and Telugu. The Vernaculars being akin to Hindi in grammatical construction, we suggest to all those desirous of learning Hindi to make use of the Vernaculars as medium rather than English. We know by experience and many who have attended our Hindi classes feel with us that even twice the time and energy spent in learning the language through the medium of English leaves us in doubt regarding many grammatical points and idioms which do not puzzle us when interpreted in the Vernaculars. One has only to compare the particular use in Hindi with its equivalent in the provincial language to solve any doubt that may arise during the course of the study of Hindi through the medium of English. Telugu is a much better aid in this respect than any other Southern Vernacular inasmuch as it saves the trouble of learning the Sanskrit pronunciation and words. One is surprised to see such a remarkable similarity in all the Indian languages.

के. म. म. द. वा. पोतदार,

We wish to take this oppurtunity of removing a serious misapprehension that seems to be prevalent regarding the motive of those who favour Hindi as an all-India-language. We know of an instance when a friend remarked, "I have just been reading a beautiful piece of Tamil poetry and I must confess that I am converted and can no more help any one to replace our language with Hindi." It is strange to find people entertaining such misconceptions. We endeavour to replace no language whatever with Hindi. We wish to give Hindi its due place in our national life—*viz.*, to serve as a *lingua franca* for all India for which it is peculiarly fitted by the extent of its adoption and the ease with which it could be learnt. India has always been under exceptional circumstances and in this case too, we feel, that it is exceptional circumstances that require every person in this land to know besides his mother tongue one more language in order to make intercourse possible with his countrymen of other Provinces. The claims of Hindi in this respect are beyond dispute. Hence the plea for the study of Hindi.

PUBLISHERS.

॥ हरिः ॐ ॥

THE

FIRST HINDI READER

THE DEVANAGRI LETTERS

स्वर (Vowels)

a	ā	i	ī	u
अ	आ	इ	ई	उ
ū	ri	e	ai	
ऊ	ऋ	ए	ऐ	
o	au	nasal-sound	ah	
ओ	औ	अं	अः	

कै. स. म. द. वा. पोतदार
ग्रंथ संग्रह

व्यंजन (Consonants)

k	kh	g	gh	ṅa
क	ख	ग	घ	ङ
ch	chh	j	jh	ṅ
च	छ	ज	झ	ञ
ṭ	ṭh	ḍ	ḍh	ṇ
ट	ठ	ड	ढ	ण
t	th	d	dh	n
त	थ	द	ध	न
p	ph	b	bh	m
प	फ	ब	भ	म
y	r	l	v	ś
य	र	ल	व	श
	sh	s	h	
	ष	स	ह	

अक्षरोंकी पहचान.

ग ल त स व र प अ ख च इ
म फ उ द श ट ण ऊ ञ क ऋ
छ ढ ध ए घ न ङ ड ष ऐ य
आ ज ठ थ झ भ ह अं औ ब अः

LETTERS WITH DOTS BELOW

क क़ ख ख़ ग ग़ ज ज़ ड ड़ ढ ढ़ फ फ़

स्वरचिन्ह (Medials)

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ

ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
े	ै	ो	ौ	ं	ः

क्+अ=क   क्+ा=का
क्+ि=कि   क्+ी=की
क्+ृ=कृ

कै. म. म. द. वा. पोतदार
ग्रंथ संग्रह

क्+े=के क्+ै=कै

क्+ो=को क्+ौ=कौ

क्+ं=कं क्+ः=कः

र+उ का स्वरूप "रू" इस प्रकार लिखा जाता है। जब दीर्घ ऊकार 'र' क आगे आताहै तो उसका स्वरूप "रू" ऐसा लिखते हैं। अनुस्वार के दो स्वरूप व्यवहारमें आते है; एक तो पूरी बिन्दाक रूपमें, जैसे 'रंक' दूसरे अर्धचन्द्राकार (ँ) जैसे 'हँस' इसमें अनुस्वार का उच्चारण पूरानहीं होता। जब बिन्दी लगतीहै तो अनुस्वार का पूरा उच्चारण होता है।

किसी अक्षरके आगे जब दो बिन्दी लगा दी जाँय, तो उसे विसर्ग कहते हैं। विसर्गका व्यवहार संस्कृत में अधिक होता है, हिन्दीमें कभी कभी ऐसे शब्द प्रयोगमें आते हैं, जैसे "अन्तःकरण" "दुःख"।

कुछ अँग्रेज़ी शब्द जैसे Pet, Ball, Cat. ऐसे हैं जिनका उच्चारण हिन्दीकी प्रचलित मात्राओंसे भली भाँति नहीं हो सकता, इसलिये इस प्राइमरमें उस कमीको पूरा करनेके लिये निम्न लिखित चिन्होंका समावेश किया जाता है।

'Pet' शब्दमें 'प' और 'ट' के बीच जिस स्वरका उच्चारण होता है उसे इस '◌ॅ' चिन्ह द्वारा हिन्दीमें लिख सकते हैं जैसे पॅट।

इसी प्रकार Ball शब्द भी 'बॉल' ऐसा लिखा जा सकता है। और Cat में भी बीचके स्वरको '◌ॅ◌' ऐसे लिख सकतेहैं जैसे केट।

3998
तारीख 23/2/93

पाठ १

अ	ब	अब	ई	ख	ईख	ए	क	एक
आ	म	आम	उ	ठ	उठ	ऐ	न	ऐन
इ	न	इन	ऊ	न	ऊन	ओ	स	ओस
औ	र	और	अं	श	अंश			

पाठ २

क	ब	कब	घ	र	घर
ग	प	गप	छ	ल	छल
स	च	सच	ज	ब	जब
च	ख	चख	झ	ट	झट
प	ग	पग	फ	ल	फल
र	ट	रट	भ	र	भर
ब	स	बस	य	ह	यह
ध	न	धन	म	न	मन

पाठ ३

खप	गज़	गरम	पलक
वह	धड़	सड़क	चमक
हल	तप	नरम	सहल
तक	बन	अगर	नगद
शक	कर	शहर	क़लम
पढ़	चल	महल	ख़बर
रस	मत	ठहर	कसर
लड़	बक	जगह	ज़हर

पाठ ४

जल भर	यह पढ़	घर पर ठहर
घर चल	रस चख	फल चख
मत डर	सड़क पर चल	बस कर
सच कह	शक मत कर	

मात्राओं का जोड़ना।

क्+आ=का काम काज ल्+इ=लि लिख सिर
ख्+आ=खा खाल ख़ास त्+इ=ति तिल दिल

म्+ई=मी	मील	मीन	ख्+ऐ= खै	खैर	चैन
स्+ई=सी	सीप	सीख	भ्+ओ=भो	भोर	भोग
प्+उ=पु	पुल	पुर	च्+ओ=चो	चोर	चोट
ग्+उ=गु	गुल	गुम	म्+औ=मौ	मौज	मौत
द्+ऊ=दू	दूध	दूब	फ्+औ=फौ	फ़ौज	शौक़
झ्+ऊ=झू	झूठ	झूम	स्+अं=सं	संग	संत
ट्+ए=टे	टेर	टेक	र्+अं=रं	रंक	रंग
स्+ए=से	सेव	सेर	त्+अः=तः	अन्तः	
ब्+ऐ=बै	बैल	बैर	त्+ऋ=तृ	तृण	

पाठ ५

चाचा	क़ौम	तंग	शूर	बेर
मामा	कौआ	रंग	ठंडा	मेल
काला	दिशा	वंश	झंडा	भेष
माला	दिन	हंस	दंगा	ऊँचा
तारा	मिट	चुप	साँचा	पूँछ
सोना	भीड़	कुछ	ढाँचा	मूँछ
लोटा	चीख़	धूल	एक	सूँड़
छोटा	संग	फूल	देश	फूँक

के. म. म. द. वा. पोतदार
ग्रंथ संग्रह

तैर	ऐसा	पैसा	भैंस	गोंद
पैर	बैल	कैंची	जोंक	चोंच

पाठ ६

काजल	सोचना	शरबत	सुनसान
काग़ज़	पूछना	मलमल	होनहार
पढ़ना	हँसना	पलटन	हँसमुख
खेलना	बोलना	हलचल	शूरवीर
बेकार	कमरा	कसरत	सेनापति
निडर	खिड़की	करवट	होशियार
रेतीला	किताब	मरघट	फुरतीला
मैदान	चटाई	छलबल	गुपचुप

पाठ ७

बेकार मत बैठ। एक मील चल। सागर तक जा। झूठ मत बोल। अपना नाम कह। शरबत पी। कसरत ख़ूब कर। सिर उठा। बहुत फूल तोड़। तारा चमकता है। एक देश एक भेष।

पाठ ८

निडर होजा। गुप चुप मत बैठ। कमरा साफ़ कर। कैसा होशियार बालक है। वह बड़ा हँसमुख है। यह मैदान रेतीला है। खिड़की खोल। किताब ख़राब मत कर। शिवाजी शूरवीर सेनापति था। यह लड़का होनहार है। जगह साफ़ सुथरी रख। यह काली भैंस मेरी है। वह हलचल मचा रहा है। काग़ज़ बड़ा महँगा है। बंदर की पूँछ बड़ी है। यह शहर सुनसान है। हम हिन्दुस्तानी हैं।

पाठ ९

भारत	बकरी	मुश्किल	मतलब
अकाल	जासूस	ज़रूरत	कचहरी
मालिक	मालूम	तलवार	अधिकार
बहिन	हैरान	महाशय	दरवाज़ा

भारत हमारा देश है। सागरके किनारे चल। मुझे मालूम है। वह कौन है? झूठी बात कहना पाप है। मीठा दूध पीओ। वह जासूस है। मेरा मालिक आया। किताब पढ़ा करो। मैं रसायन सीखूंगा। दूरबीन लाओ। बाबा कचहरी गये।

पाठ १०

आप कहाँ रहते हैं?

मैं साहूकार गलीमें रहता हूँ।

वहांसे बिजलीकी गाड़ी कितनी दूर है?
मेरे घरसे दो सौ गज़के फ़ासलेपर होगी।
पाठ शाला जानेमें कितने पैसे लगते हैं?
मुझे तीन पैसे किराया देना पड़ता है।
मैं आज आपके घर चलूंगा।
आप बड़ी खुशीसे चल सकते हैं।

संयुक्त अक्षर

जिन अक्षेरांके पीछे '।' ऐसा चिन्ह हो उनको पाईवाले अक्षर कहते हैं जैसे थ. प. ग. म. त. य.।

ऐसे अक्षेरांकी पाई गिराकर उनको अगले अक्षरसे जोडा जाता है जैसे,

त्+थ=त्थ	पत्थर	म्+य=म्य	म्यान
प्+य=प्य	प्यार	ज्+ज=ज्ज	उज्जैन
स्+म=स्म	भस्म	ब्+ब=ब्ब	गुब्बारा
क्ष्+म=क्ष्म	लक्ष्मण	ज्+ञ=ज्ञ	ज्ञान

विना पाईवाले अक्षर जैसे क, ट, ड, द, ह, ह.

ट्+ठ=ट्ठ	पुट्ठा	ड्+ड=ड्ड	खड्ड
द्+ध=द्ध	शुद्ध	क्+ख=क्ख	सिक्ख
द्+म=द्म	पद्म	ह्+य=ह्य	असह्य

'र' विशेष तरहसे जुड़ता है। जब अक्षरके पहले आताहै तब ' ' इस रूपसे (अक्षरके ऊपर) लगाते हैं जैसेः—

र्+म=र्म गर्म नर्क

'र' जब किसी अक्षरके बाद आताहै तब ' ् ' इस रूपसे प्रायः अक्षरकी टांगमें लगाया जाताहै। जैसे :—

म्+र=म्र	नम्र	ट्+र=ट्र	ट्रेन
व्+र=व्र	क़व्र	द्+र=द्र	छिद्र
ह्+र=ह्र	ह्रस्व		

पाठ ११

समुद्र	कृष्ण	मित्र	अध्यापक
सूर्य	श्रीराम	दुश्मन	कर्मवीर
पुस्तक	परम्परा	व्यायाम	उद्योगी
तीक्ष्ण	ईश्वर	क्लब	भारतवर्ष
दर्शन	उत्पन्न	विद्यार्थी	प्रान्त

आप किस प्रान्तके रहनेवाले हैं?
मेरा निवासस्थान संयुक्त प्रान्तमें है
आपके यहांकी प्रसिद्ध नदियां कौन कौनसी हैं?

हमारे प्रान्तकी दो बड़ी प्रसिद्ध नदियां श्रीगंगाजी और श्री जमुनाजी हैं।

इन पुनीत नदियोंके तटपर किन महीनोंमें मेला लगता है?

श्रीगंगाजीके किनारे ऐसेतो बहुतसे स्थानोंपर मेले होते हैं पर माघके महीनेमें प्रयागजीमें यात्रियोंकी ख़ूब भीड़ होती है। श्री जमुनाजीके किनारेपर श्रावण मासमें कृष्णाष्टमीके अवसर पर श्रीबृन्दावनमें बड़ा भारी मेला होता है।

पाठ १२

श्री रामचन्द्रजीने समुद्रपर पुल बांधा था।
सूर्यभगवान नित्य पूर्वदिशामें दर्शन देते हैं।
क्लबमें मेरे सभी मित्र हैं, दुश्मन एकभी नहीं।
वह विद्यार्थी बड़ा उद्योगी है।
उसकी बुद्धिभी तीक्ष्ण है।
क्या आज आपने व्यायाम किया?
भारत वर्षमें परम्परासे कर्मवीर उत्पन्न होते रहे हैं।
अध्यापक वसुने कई पुस्तकें लिखी हैं।
श्री कृष्णजीका जन्म मथुरामें हुआ था।
मद्रास प्रान्तमें हिंदी भाषाका प्रचार शीघ्र हो जाएगा।

पाठ १३

कल हम पौनेचार बजे स्टेशनपर गये।
गाड़ीके आनेका समय सवा पांच बजे था।
टिकट लेने वालोंकी बड़ी भीड़ थी।
पन्द्रह मिनट तो इधर उधर घूमनेमें चले गये।
घड़ी देखी तो चार बजके बीस मिनट हो गये थे।
मैंने एक कुलीको डेढ़ आनेके पैसे देकर टिकट मंगा लिया।
इतनेमें पौनेपांच हो गये।
अब गाड़ीका रास्ता देखने लगे।
बार बार घड़ी देखते थे।
आखिर पांचपर पांच मिनट हुए तो गाड़ीकी घंटी बजी।
सब मुसाफ़िर तय्यार हो गये।
ठीक सवा पांच बजे गाड़ी आ पहुँची।
हमभी बैठ गये।
साढ़े पांच बजे गाड़ी खुली; फपफप् करता हुआ इन्जिन रवाना हुआ।

पाठ १४

आज हमारे स्कूलमें क्रिकॅट मेच था।
मैंभी बड़ा खिलाड़ी हूँ।
मैं समझता था कि मुझे मेचमें ज़रूर शामिल करेंगे।

लेकिन जब हमारे कप्तानने लड़कोंको बुलाकर "एक, दो, तीन, चार, पांच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह" इस प्रकार ग्यारह लड़कोंको चुन लिया तो मुझे बड़ा ग़ुस्सा आया औरमैं ग़ुस्सेके मारे फूटफूटकर रोने लगा।

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०.

पाठ १५

एक कुत्ता सड़कके बीच पड़ा रहता था।
आने जाने वालोंको उसके मारे बड़ी तकलीफ़ रहती थी।
एक दिन एक आदमीने उस कुत्तेसे पूछा, "तू रास्ते में क्यों पड़ा रहताहै?"
उसने जवाब दिया, "मैं अपनी अक़्ल ख़र्चकर भले बुरे आदमियोंकी पहचान करता हूँ"।
उस आदमीने कहा, "ज़मीन पर पड़े पड़े तुझे भले बुरेकी ख़बर कैसे होती है"।
कुत्ता बोला, "जो भला होता है वह अपनी गर्ज़में मस्त चला जाता है, और जो बुरा होता है वह मुझे देख कुढ़ता है और मुफ़्तमें लातें मार जाता है। भले बुरेकी जांचका मेरा यही तरीक़ा है"।

पाठ १६

हे जगके पालन हारे!
भंडारा सुख का सारे,
हो हिन्ददेशमें प्यारे!
चमकादे भाग हमारे ॥ १ ॥
हे जगत पिता प्रभु प्यारे
हम सबके रच्छनहारे !
जिसने सिरजे जग सारे
चमकादे भाग हमारे ॥ २ ॥
तू सूरजको चमकावे,
जिससे सब जगत दिखावे,
कर सबके हिय उजियारे,
चमकादे भाग हमारे ॥ ३ ॥
जिस बोलीमें करतारा!
हमने यों तुझे पुकारा,
वह फैले भारत सारे,
चमकादे भाग हमारे ॥ ४ ॥

(शिशु)

पाठ १७

"जिसका काम उसीको साजे"

एक धोबीके पास एक कुत्ता था। उसको घरकी रखवालीके लिये पाल रक्खा था; और कपड़े ढोनेके लिये एक गधाभी था। मसल है कि "धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका" सो उस कुत्तेकी भी यही दशा थी। उस बेचारेको पेट भर खाना कभी नहीं मिलता था।

एक दिन, दिन-भरका हाराथका, धोबी घाटसे आया। कुछ खा पीकर लेट रहा। उस दिन कुत्तेको खाना देना वह बिलकुल भूल गया। उसी रातको धोबीके घर चोर घुसे। कुत्ता भूखके मारे धोबी पर झुंझलाया हुआ था। वह कुछ न बोला, चुपचाप पड़ा रहा।

गधा जो वहीं पर खड़ा था, कुत्तेसे बोला, "अरे भाई, भूँकता क्यों नहीं? चोर आये हैं। भोंक कर धोबीको जगादे।"

कुत्ता बोला, "तुझे क्या मतलब, यह मेरा काम है। तू चुपका खड़ा रह। पेटमें अन्न नहीं, काहेके बल भूँकूं? अच्छा है, चोर चोरी कर ले जायँगे। मेरी बलासे।"

गधेने कहा, "तू नहीं भूंकता, तो ले मैं ही धोबीको जगा देता हूँ।"

कुत्ता बोला, "देख, दूसरेके काममें हाथ डालना अच्छा नहीं। तू कौन है मेरे काममें दख़ल देनेवाला?"

गधा बिचारा बडा स्वामिभक्त था। उससे न रहा गया। वह धोबीको जगानेके लिये धोबीके पास जाकर बड़े ज़ोरसे 'चीपों' 'चीपों' करने लगा। धोबी भर नींद सो रहा था, एकाएक गधेकी आवाज़से जागकर गुस्सेसे भर गया और लगा 'धुआं धूं' डंडेसे गधेको मारने। मारते मारते गधेको अधमरा कर डाला।

कुत्ता बैठा बैठा मुस्कुराता रहा और बोला,

"जिसका काम उसीको साजै
और करे तो डंडा बाजै"

पाठ १८

लालाजी का नौकर

एक लालाजी बड़े धनवान थे। पढ़े लिखेभी खूब थे। देशभक्ति का भी कुछ दिखौआ रङ्ग चढ़ा था। सभा समाजों में बड़े ज़ोरसे व्याख्यान देते थे; पर थे बड़े कंजूस, मक्खीचूस।

उनके पास एक नौकर था। वह था तो बडा सीधा साधा और स्वामिभक्त पर अक्लसे ख़ारिज था। इस में उस बेचारे का कोई दोष भी नहीं था। वह अभी गांवका गँवारही था।

लालाजी कभी कुछ देते लेते न थे। देने के नामसे उन्हें बुख़ार चढ़ आता था। एक बार कुछ मित्रोंके अनुरोधसे उन्हें चन्दा लिखनाही पड़ा।

लोग चन्दा उगाहने आये, तो लालाजी कोठरीमें जा दिये। नौकर को बुलाकर कहा, "जाओ, कह दो लालाजी घर नहीं हैं" नौकर बेचारा यह छलछन्द भला क्या जाने? उसने सरल स्वभावसे जाकर कह दिया, "लालाजी कहते हैं कि वे घर पर नहीं हैं"

पाठ १९

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

दोपहर का समय था। धूप कड़ाकेदार पड़ रही थी। कलकत्तेसे आनेवाली गाड़ी स्टेशनपर पहुंची। उसमेंसे दो मुसाफ़िर उतरे। एक नवयुवक कोट पतलून डटे हुवे था। दूसरा एक अधेड़ उमरका मनुष्य नंगे पैर, धोती कुड़ता पहिरे हुवे था। नवयुवकके हाथमें एक बेग था। स्टेशनपर उसने 'कुली' 'कुली' पुकारा पर वहां कोई कुली न था। नवयुवकने स्टेशनमास्टर से कुलीके लिये झगड़ा किया। यह देख कर दूसरा मुसाफ़िर बोला "मैं आपका बेग लिये चलता हूं" नवयुवकने ऐंठ कर कहा "वॅल हम आपको पुरी मज़दूरी देंगा" नवयुवक आगे आगे चला और पीछे पीछे बेग उठाए दूसरा मुसाफ़िर जाता था। घर पहुंच कर नवयुवकने बेग उठानेवालेको मज़दूरी देनी चाही लेकिन उसने नहीं ली।

दूसरे दिन गांवमें पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागरके आने की धूम थी। उनके स्वागतके लिये सब गांववाले इकट्ठे हुवे। नवयुवक भी वहां पहुंचा। देखता क्या है कि जिस मनुष्यके गलेमें फूलोंकी मालायें डाली जा रहीं है और जिसका स्वागत हो रहा है वह वही बेग उठाने वाला मुसाफ़िर है। नवयुवक को बड़ी शर्म आई और अपनी ऐंठपर पछताने लगा। सभा ख़तम होनेके बाद वह विद्यासागरजीके घर गया और उनके चरणोंमें गिरकर क्षमा मांगी। आज उसे मालूम हुवा कि कोट पतलून पहननेसे कोई बड़ा नहीं हो जाता। बड़ा वही है जो बड़े काम करता है।

पाठ २०

निज भाषा

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नतिको मूल;
बिनु निज भाषा ज्ञानके, मिटत न हियको सूल;
करहु विलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल;
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल;
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार;
सब देशन सो लै करहु, भाषा माँहि प्रचार;

प्रचलित करहुं जहानमें, निज भाषा करि यत्न;
राज काज दरबारमें, फैला वहु यह रत्न ।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

पाठ २१

इच्छाशक्ति

आप जो चाहें बन सकते हैं । आपमें सब ताकतें मौजूद हैं । मनुष्य एक सोचने वाला पशु है । वह जैसा सोचता है वैसा बन जाता है । आप किसी कठिन कामके करनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर लें तो वह काम आधा उसी समय हो जाता है; बाकी आधा आप शीघ्र कर सकते हैं । जब आप खुद यह मान लें "मैं इसे नहीं कर सकता" या "मैं ऐसा नहीं बन सकता" तो साक्षात ब्रह्माभी आपकी मदद नहीं करेगा । पहले अपने अंदरकी कमज़ोरी दूर कीजिये, निराशा के भूतको भगाइये । आपकी सफलता आपके आत्मविश्वाससे बढ़ नहीं सकती । जितना आपको अपने ऊपर विश्वास है उतनीही शक्ति आपमें काम करनेकी है । आप अपना सारा बल तभी लगा सकते है जब आपको अपनी सफलता पर अटल विश्वास हो । दिनरात अपनी धुनमें लग जाइये । उठते बैठते, चलते फिरते, उसीका ध्यान कीजिये; मनमें भय और शंकाके भाव रखकर आप सफ-

3998

लता नहीं पा सकते। अपने मनकी गतिका रुख बदलिये। उसे सफलताकी ओर चलाइये। मनके कमरेको आशा, प्रसन्नता और सफलताके चित्रोंसे सजाइये। फिर सफलता आपकी मुट्ठीमें है। वह हाथ बांधकर आपके सामने आ खड़ी होगी और संसार आपको विजेताके रूपमें देखेगा।

पाठ २२

हमारा देश

यह हमारा देश है। यह हमारी प्यारी जन्मभूमि है। इसे हम बारबार प्रणाम करते हैं। यह हमे खानेको देती है। इसीके अनाजसे हमारा यह शरीर बना है। यहीं हमारे पवित्र तीर्थस्थान हैं। ऋषि मुनियोंने यहीं तप किया था। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र यहीं हुवे थे। बाल ब्रह्मचारी भीष्म पितामह इसी माता की गोदमें खेले थे। कैसे कैसे नररत्न इस प्यारे भारत-वर्षमें उत्पन्न हुवे हैं। उनका यश चारों ओर फैल रहा है। हमारे देशका प्रत्येक पर्वत उनकी कीर्तिको गा रहा है। प्रत्येक नदी उनके पवित्र चरित्र का बखान कर रही है। जङ्गल उनके विमल गुणों का कथन कर रहे हैं। ऐसे देशमें पैदा होना बड़े सौभाग्यकी बात है। हमें यहां उत्पन्न होनेका अभिमान है। हमें अपने देशके प्रत्येक नदी, नाले, जङ्गल, पहाड़ और तीर्थसे प्रेम करना चाहिये। हम ईश्वरसे यही मांगते हैं कि हमारा यह देश सदा

सुखी रहे। इसके वर्तमान सभी दुःख दूर हो जाँय। यह फिर वैसा ही प्राचीन ऋषियोंके समयका स्वतन्त्र भारतवर्ष बन जाय।

पाठ २३

साहस

संसार साहसी लोगोंके लिये है। भीरु सदा सोचते रहते हैं। वे बैठे तरकीबें लड़ाया करते हैं। पर साहसी मैदान मार ले जाते हैं। बिना हिम्मत के योग्यता व्यर्थ है। सफलता साहसकी पुत्री है। वह सदा साहसी पुरुषके साथ रहती है। दीर्घसूत्री तो शेखचिल्लियों की तरह मनके मोदक ही खाते रहते हैं। जो कर्मवीर है वह बाजी जीत लेता है।

जिसने साहस खो दिया उसने सफलतासे हाथ धो लिया। कायर भयके सामने काँपने लगता है। साहसी का लोहू भयके सामने खिल जाता है। उसमें नयी जान आ जाती है। साहसके बिना बड़ा डीलडाल किस कामका। उसे बोझ मात्रही समझिये। दुनियाका इति हास साहसी पुरुषों और स्त्रीयोंकी जीवनप्रद कथाओं से भरा है। उनके पाठसे दूसरोंको शिक्षा मिलती है। वह साहस केवल युद्धक्षेत्रों में ही नहीं दिखलाया जाता। हम अपने नित्यके जीवनमें उसे काममें ला सकते हैं। कठिन कामको शुरु करते समय मत डरिये। वहीं आदमी की परीक्षाभी होती है। यदि आप डर गये तो बाजी गई। "मैंने अभी निश्चय

नहीं किया" यह निर्बलताकी निशानी है। इसीके कारण आप आज तक कुछभी करने नहीं पाये। जो साहसी है उसे निश्चय करनेमें देर नहीं लगती। और जब निश्चय कर लेता है तो कामके पीछे हाथ धो कर पड़ जाता है। दुनिया उसको देखकर पहले विस्मित होती है, पीछे पूजा करने लगती है।

पाठ २४

कायर

जो जगके सब कार्य स्वार्थके गज़से नापै;
सबमें निजसम सदा स्वार्थ परताही भाँपै;
पर-हितकी चर्चा परभी डर करके काँपै;
वहां कभी ना जाय भद्र जन जुडैं जहां पै;
हा! ऐसे कायरसे भला क्या कोई पुरुषार्थ हो;
हो ऐसे सब जिस जातिमें वह किस भाँति कृतार्थ हो।

—श्रीधर पाठक।

पाठ २५

समयका सदुपयोग

सदा सब काम समयपर करना चाहिये। उससे चरित्र-बल बढ़ता है। बुरी आदतें सुधरती हैं। मनुष्य समयका उप-

योग करना सीखता है। सुस्ती दूर भग जाती है और शरीरमें चैतन्यता आती है। सबेरे सूर्य निकलनेसे पहले उठकर अपने काममें लग जाना चाहिये। भोजनका भी निश्चित समय होना उचित है। रातको देर तक जगना हानि कारक है। बहुतसे लोग दिनको गप शप करते हैं और रातको दो तक जगते हैं। ऐसा करना बहुत बुरा है। समयका उचित लाभ लेना चाहिये। जो लोग फ़ुरसतकी शिकायत करते हैं वे ग़लतीपर हैं। सच बात तो यह है कि वे व्यर्थ बातोंमें अधिक समय गंवाते हैं। समयका सदुपयोग करनेवालोंहीने संसारमें बड़े काम किये हैं। प्रत्येक सेकण्ड कीमती है। उसे काममें लाना चाहिये। जब समय हाथसे निकल जाता है तो सिर धुन धुन कर पछताना पडता है; पर—

तब पछताये क्या होत है
जब चिडियां चुग गईं खेत

पाठ २६

अबुदल कादर

अबदुल कादर अपनी माँका लाड़ला बेटा था। उसका बाप मर चुका था इसलिये उस बेचारेको छोटी उमरमेंही रुपया कमाने

की चिंता लगी। उसके गांवसे एक क़ाफ़ला तिजारत करनेके लिये परदेश जा रहा था। उसकी माँने उसको उस क़ाफ़लेके साथ भेजनेका निश्चय किया। जब चलनेका समय आया तो आंखोंमें आंसु भर बोली, "बेटा सदा सच बोलना। खुदा तुम्हारा हाफ़िज़ है। मैंने चालीस दीनार तुम्हारे कपडोंमें सी दिये हैं। तुम दूरदेशमें जा रहे हो इसलिये इस ज़िन्दगीमें फिर शायद मुलाकात न हो। पर हमलोग क़यामतके दिन ज़रूर मिलेंगे।

लड़का परदेशको रवाना हुवा। आठ सात दिनका सफ़र तो बिना किसी घटनाके कट गया। नवें दिन काफ़लेको डाकू ओंने आ घेरा। जब सब माल डाकू लूट चुके तो अबदुल क़ादर की बारी आई। एक डाकूने लड़केसे पूछा—

"तुम्हारे पास कितना रुपया है?"

लड़केने बड़ी सादगीसे उत्तर दिया—

"मेरे कपडोंमें चालीस दीनार सीये हुवे हैं"

डाकू हंसने लगा। उसने लडकेकी बातका विश्वास नहीं किया। फिर दूसरे डाकूने लड़केको धमकाकर कहा—

"ठीक ठीक बताओ तुम्हारे पास कितना रुपया है?" लड़केने धीरेसे फिर वही उत्तर दिया। उस डाकूनेभी लडके की बातका यकीन नहीं किया। वह अपने साथीसे बोला—

"यह लड़का बड़ा शैतान है, इसको सरदारके पास ले चलो"

जब अबदुलकादर सरदारके पास पहुंचा तो डाकुओंने लड़केकी बात उससे कही। गुस्से भरे शब्दोंमें सरदारने लडकेसे पूछा—

"सच बतलाओ तुम्हारे पास कितना रुपया है?"

लडकेने मुसकुराकर कहा—

"मेरे पास चालीस दीनार कपडोंमें सीये हुवे हैं। मैंने आपके आदमियोंको यही उत्तर दिया है, पर वे मेरी बात नहीं मानते"

सरदारने अपने साथियोंको लडकेके कपड़े उधेड़नेके लिये हुक्म दिया। अबदुल कादरका कहना सच निकला। यह देखकर डाकुओंका सरदार बड़ा विस्मित हुवा। उसने लड़केको पास बुलाया और बडी मोहब्बतसे पूछा—

"तुमने सच कैसे कह दिया?"

लड़केने बड़ी शान्तिसे उत्तर दिया।

"मैंने घरसे चलते वक्त अपनी माँके सामने यह कसम खाई थी कि कभी झूठ न बोलूंगा"

सरदारने कहा—

लड़के क्या तू इस छोटीसी उमरमें अपनी माँकी बातों का इतना ख्याल करता है? मैं इतना बड़ा हो गया लेकिन मैं खुदाके हुक्मकी कुछभी परवाह नहीं करता। मैं आज तुमसे यह सबक़ सीखता हूं। मुझे अपना हाथ दो। मैं आजसे अपनी बुराइयां छोडनेकी कसम खाता हूं।"

इस दृश्यका सरदारके साथियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा उन्होंने बड़ी नम्रतापूर्वक सरदारसे कहा—

"आप बुराइयोंमें अब तक हमारे अगुआ रहे हैं, अब मेहरबानी करके इस नेक रास्तेमें भी हमारे अगु आ बनिये"

सबने बुरा रास्ता छोड़नेकी कसम खाई। अबदुल कादरका नाम चिरस्मरणीय हो गया।

पाठ २७

देश सेवा

वह पुरुष इस संसारमें धन्य है जिसको देशसेवा की लगन हो। कौन ऐसा है जो मौतके मुखसे बच सकता है? कौन ऐसा है जिसको संसारका ऐश्वर्य नहीं छोड़ जाना है। कौन ऐसा है जो यहां सदा बैठा रहेगा? एक न एक दिन हम सबको एकही मार्गसे जाना है। इस नाशवान संसारमें उस पुरुषका जीवन धन्य है जिसने अपना सब कुछ देश सेवामें लगा दिया

हो। ऐसा पुरुष केवल अपना जीवन सफलही नहीं करता बल्कि दूसरों को भी मार्ग दिखलाता है। उसके जीवनमें एक अद्भुत शक्ति आ जाती है। उसके मुंहसे निकले हुवे शब्द दूसरोंमें जान फूंक देते हैं। उसका नाम पावन करने वाला हो जाता है। उसके जीवनकी कथायें शिक्षाप्रद हो जाती है। उसकी यश अपनेही देशमें नहीं, द्वीपद्वीपांतरों तकमें फैल जाता है। मनुष्यमात्र उसका सम्मान करने लगते हैं। सारा संसार ऐसे पुरुषका हृदयसे अभिनन्दन करता है। जहां जहां वह जाता है, जहां जहां वह रहता है वे स्थान उसके स्पर्शसे पवित्र हो जाते हैं। जिन मनुष्योंके साथ वह ज़राभी वार्तालाप करता है वे भी उसके संगसे तर जाते हैं।

ओहो! देशसेवा की महिमा बडी विचित्र है। फिर ऐसे देशकी सेवा क्यों न मोक्षदायिनी होगी जिसमें ऋषि मुनियोंने उग्र तप किया हो; जिस देशमें प्रकृतिने अपना पूरा सौन्दर्य दिखाया हो; जहांके पर्वत, नदियां वृक्ष देशकी श्रेष्ठताका प्रमाण हैं; जिस देशकी रत्तीरत्ती ज़मीन महात्माओंके रुधिरसे सींची हुई हो। ऐसे पुनीत देशमें उत्पन्न होकर भी जो मनुष्य उसकी गिरी हुई दशा सुधारनेकी चेष्टा नहीं करता उसका जीवन देशके लिये व्यर्थ बोझा है।

पाठ २८

कोयल

कुहू कुहू किलकार सुरीली कोयल कूक मचाती है;
सिर और चोंच झुकाय डाल पर बैठी तान उडाती है;
एक डाल पर बैठ एक पल झट ह्याँसे उड जाती है;
पेडों बीच फड़कती फिरती चंचल निपट सुझाती है;
डाली डालीपर मतवाली मीठे बोल सुनाती है;
है कुरुप काली पर तौ भी जग-प्यारी कहलाती है;
इससे हमें सीखना चाहिये सदा बोलना मधुर बचन;
जिससे करैं प्यार हमको सब जानैं अपना बन्धु स्वजन।

—श्रीधर पाठक।

पाठ २९

एक भाषाके लाभ

मनुष्यसे मनुष्यको मिलानेका बड़ा भारी साधन भाषा है। जब हम एक दूसरेकी बात नहीं समझते तो आपसमें प्रीति कैसे हो सकती है? समाजमें जितने झगडे फ़िसाद फैलते हैं उन सबका एक बड़ा भारी कारण आपसकी बात न समझना

है । यही कारण है कि प्रत्येक सभ्यदेशमें समाजका संगठन करनेके लिये एक भाषाका प्रचार मुख्य माना गया है । हम एक छोटासा उदाहरण देकर अपनी बातको स्पष्ट करते हैं ।

एक मकानमें जुदी जुदी भाषा बोलनेवाले लोग रहते थे। एक दिन आधी रातके समय डाकुओंने उस मकानको घेरा । सब लोग अपनी भाषामें शोर गुल करने लगे । किसीकी कोई बात नहीं समझता था । चोरोंने सबको बारी बारी लूट लिया और माल लेकर चम्पत हुवे ।

यदि वे एक दूसरेकी बात समझते तो सब मिलकर डाकुओंका सामना करते । एक दूसरेकी भाषा न समझनेसे उनकी संघशक्ति जाती रही । वे अकेले पड़ गये । साझे दुःखमें वे एक दूसरेकी मदद न कर सके । एक भाषा न होनेसे उनको यह सब दुःख सहना पडा ।

पाठ ३०

सुकरात

सुकरात यूनानका एक बड़ा भारी तत्ववेत्ता हो गया है । वह बड़ा देश हितैषी था । अपने देशके अन्दर जो पुराने विचार जातिको हानि पहुंचा रहे थे उनका वह कट्टर विरोधी था । अपनी मधुर भाषा और सदाचारके बलसे उसने नवयुवक लोगोंको अपने वशमें कर लिया । उसकी पाठशालामें दूर दूरसे

ह 1907

विद्यार्थी पढ़ने आते थे। और उसके विचारोंसे लाभ उठाकर उनका प्रचार करते थे। इस प्रकार सुकरातकी कीर्ति चारों ओर फैलने लगी।

यूनानके अधिकारियोंको सुकरातकी लोकप्रियता अच्छी न लगी। वे उसके जानी दुश्मन हो गये। वे कोई न कोई अवसर उसको दण्ड देनेका ढूंढने लगे। आखिर उन्हों ने सुकरात पर नवयुवकोंको बहकानेका इल्ज़ाम लगाया। कहा यह गया कि सुकरात पुराने देवि देवताओंके विरुद्ध नवयुवकोंमें बातें फैलाता है। न्यायालयके सामने सुकरातको बुलाया गया। सुकरातने कह दिया कि वह सत्यकी शिक्षा देनेसे हट नहीं सकता। सुकरातको विषका प्याला पीनेकी सज़ा दी गई। हंसते और मुसकुराते हुवे उस विद्वान पुरुषने ज़हरका प्याला पी लिया और संसारको अपने सिद्धांतके लिये जीवन होम करनेका उदाहरण दिखला दिया। यूनानका राष्ट्र नष्ट हो गया। वे अधिकारीभी मिट्टीमें मिलगये; पर सुकरातका नाम सदाके लिये अमर हो गया।

पाठ ३१

सत्य

सब धर्मपुस्तकों में सच बोलना श्रेष्ठ माना गया है। हिंदु शास्त्र तो सत्यके बराबर कोई धर्मही नहीं मानते। विद्यार्थि

योंको आरम्भसे ही सच बोलनेकी शिक्षा दी जाती थी। इसी सत्यके बलसे संसारमें महापुरुषोंने बड़े काम किये हैं। इस लिये हम सबको सदा सत्य बोलना चाहिये।

महात्मा गोखलेजी हमारे देशके पूज्य नेता हो गये हैं। वे बचपनसेही सत्यके बड़े पक्षपाती थे। उनके मास्टर उनके इस गुणके कारण बहुत प्रसन्न रहते थे। एक बार इनके शिक्षकने एक कठिन गणितका प्रश्न घरमें लगानेके लिये दिया। गोखलेजी ने किसी मित्रसे पूछकर उस प्रश्नको हल कर लिया। दूसरे दिन जब क्लासमें गये तो शिक्षक प्रश्नके ठीक उत्तरको देखकर इनसे बडा प्रसन्न हुवा। वर्गका कोईभी विद्यार्थी उस प्रश्नको न लगा सका था। इस लिये शिक्षक ने गोखलेको वर्ग में सबसे अव्वल बैठनेको कहा। यह सुनकर गोखले फूट फूट कर रोने लगे। जब अध्यापकने उसे रोनेका कारण पूछा तो गोखलेने कहा, "यह प्रश्न मैंने खुद हल नहीं किया। मेरे मित्रने इसे लगाया है; इसलिये मुझे अव्वल बैठनेका कोई अधिकार नहीं।" शिक्षक बड़ा प्रसन्न हुवा। विद्यार्थियों पर भी गोखले के इस सत्य बलका बड़ा प्रभाव पड़ा और उस दिनसे सब विद्यार्थी उनको बडे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे। सच है—

साँच बरोबर तप नही, झूठ बरोबर पाप
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप

पाठ ३२

ईश्वर जो करता है अच्छेके लिये करता है

एक मनुष्यका नाम राधे था, वह बड़ाही सीधे स्वभावका था। वह सदा यह कहा करता था कि ईश्वर जो करता है वह अच्छेके लिये करता है। वह इञ्जन चलाता था और अपने काममें बड़ा चतुर था। यद्यपि वह चतुर था तथापि एक दिन असावधानताके कारण उसकी गाड़ी दूसरी गाड़ी से लड़ गई। इससे उसको बहुत चोट आई और उसका एक पैर टूट गया। तुरन्त और लोग उसे अस्पतालको ले गये। वहां पर वह धीरे धीरे अच्छा होने लगा। एक दिन उसके कई मित्र उससे मिलने आये। उन मित्रोंमेंसे किसीने उससे पूछा, "क्यों राधे इस समय ईश्वरने तुम्हारे लिये क्या किया" राधेने हंसकर कहा, "क्यों, अब तो मुझे सिर्फ़ एकही पैरका जूता ख़रीदना पड़ेगा। यह सुन उसके सब मित्र पेट पकड़कर हंसने लगे।

—रामकृष्ण दवे—"शिशु"

पाठ ३३

खलासी और सौदागर

एकदिन एक खलासी ने एक सौदागर से पूछा कि "भाई, तुम्हारे बाप, दादा और परदादा कहां मरे।" खलासी ने जवाब दिया "समुद्रपर।" सौदागरने अचंभेमें आकर पूछा

"अच्छा, तब क्या तुम समुद्र पर जाने से डरते नहीं हो? कहीं तुम्हारी भी वही हालत न हो?" खलासी ने नम्र भावसे पूछा, "ज़रा यहतो बतलाइये कि आपके पूर्वजों की मृत्यु कहां हुई?" व्यौपारीने मुस्करा कर कहा "चारपाई पर।" खलासी ने पूछा "तो क्या आप चारपाई पर बैठनेसे डरते हैं?

पाठ ३४

तू नहीं तो तेरा बाप

एक दिन किसी नदी के किनारे एक भेड़िया पानी पी रहा था। इतने में एक भेड़का बच्चाभी पानी पीने आया। उसको देखकर भेड़ियेके मुँह में पानी भर आया, और उसको मारनेका उपाय सोचने लगा। उसने बच्चेसे कहा, "अरे तू पानी क्यों गंदा करता है, नहीं देखता है कि मैं यहां पानी पी रहा हूं?" बच्चे ने जवाब दिया, "महाराज, पानी का बहाव तो मेरी ओर है, भला आपका पानी कैसे गंदा हो सकता है?" यह सुनकर भेडिये ने कहा, "अच्छा, उसदिन तूने मेरी घास क्यों चर ली?" बच्चेने कहा, "अभी मेरे दांतही नहीं उगे हैं, तब घास कैसे चर सकता हूं।" भेडिया कुछ शर-मिन्दा हुआ और गुस्सेमें आकर कहा, "अरे धीठ, तूने पर साल मुझे गाली क्यों दी थी?" बच्चेने विनयसे कहा, "महाराज, उस समय तो मेरा जन्म भी नहीं हुआ था।" भेडि ये को आखिर मारना तो थाही, इस लिये झुंझला कर कहा

"अच्छा तू नहीं तो तेरे बापने दी होगी" और इस बहानेसे वहीं उस ग़रीब बच्चे को ख़तम कर डाला।

पाठ ३५

बुद्धिका व्यवहार

प्राचीन समय में किसी राजाके यहां तीन नामी चित्रकार थे। एक दिन राजाने यह आज्ञा दी कि जो सबसे बढ़िया चित्र खींचेगा उसे पारितोषिक दिया जावेगा। एक चित्रकारने फूलोंके हारका ऐसा चित्र खींचा कि शहद की मक्खी उसे सच्चा समझ कर उसके ऊपर शहद चूसनेके लिये आ बैठी। दूसरेने फलोंसे भरी हुई डलिया का एक ऐसा बढ़िया चित्र बनाया कि चित्रकारके पालतू बन्दर की जीभ उसके फल खानेको लपलपाने लगी। तीसरेने परदे पर एक बाग़ का दृश्य खींचा। जब राजाने तीसरी तसवीरको देखा तो वह उसे ऐसी प्राकृतिक मालूम हुई कि उसने झट बाग़ में चलने को पैर बढ़ाया, कि छू जानेसे मालूम हुआ कि वह तो परदा था।

पहले दो चित्रों ने तो सिर्फ़ मधुमक्खी और बन्दरको धोखा दिया। पर, तारीफ़ उसकी है जिसने राजाको धोखेमें डाल दिया। क्यों कि मनुष्यको चित्रसे धोखा दिया जाना ज़रा कठिन है।

—शिशिरकुमार उपाध्याय—"शिशु"